शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

मानकोट लघुचित्र शैली में वैष्णव धर्म के सन्दर्भ

डॉ० (श्रीमती) सोनिका
असिस्टेंट प्रोफेसर, ड्राईंग एण्ड पेंटिंग विभाग
दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टू बी यूनीवर्सिटी) दयालबाग, आगरा
ईमेलः *sonikasandhu@dei.ac.in*

प्राप्तिः 04.03.2023
स्वीकृतः 15.03.2023

8

सारांश

'मानकोट चित्रशैली' पहाड़ी चित्रकला की जम्मू कलम के अन्तर्गत आती है। मानकोट, जम्मू और बसोहली के मध्य बसा हुआ एक छोटा सा राज्य है। इसकी स्थापना राजा मानकदेव ने की थी। उनके नाम पर इसका नाम मानकोट पड़ा। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से वहाँ धार्मिक झुकाव प्रधानतः वैष्णव धर्म की ओर था। यही कारण है कि राजा महिपत देव, टेधी सिंह, अजमत देव और दलेल सिंह आदि मानकोट शासकों के व्यक्ति चित्रों में 'वैष्णव तिलक चिह्न' उपस्थित हैं तथा मानकोट लघुचित्रों में राजा टेधी सिंह को भगवान विष्णु व भगवान कृष्ण की आराधना में लीन चित्रित करने से इस विचार की पुष्टि होती हैं। विष्णु देव के उपासक वैष्णव कहलाते हैं। वैष्णव लोग "विष्णु" के दस मुख्य अवतारों–मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, बलराम, राम, कृष्ण और कल्कि को प्रायः अधिक मानते हैं। मानकोट लघुचित्र शैली के वैष्णव प्रभाव स्वरूप चित्रित किये गये चित्र श्रीविष्णु, श्रीराम व श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित हैं।

मुख्य बिन्दु

मानकोट लघुचित्र शैली, पहाड़ी, जम्मू कलम, धार्मिक चित्रण, वैष्णव धर्म।

'मानकोट चित्रशैली' पहाड़ी चित्रकला की जम्मू कलम के अन्तर्गत आती है। मानकोट की स्थापना राजा मानक देव ने की थी, जो जम्मू के राजा नरसिंह देव (सन् 1272–1314 ईसवी) के समकालीन थे। उनके नाम पर इसका नाम मानकोट पड़ा।[1] राजा सुचेत सिंह (सन् 1822–1843 ईसवी) ने इसका पुनः नामकरण 'रामकोट' किया।

सन् 1912 ईसवी में काह्न सिंह बालौरिया ने और सन् 1933 ईसवी में J. Hutchison व J.P Vogel ने मानकोट राजाओं का पूर्ण ऐतिहासिक लेखा–जोखा दिया।[2] सन् 1929 में अजित घोष ने और सन् 1949 में एन०सी० मेहता ने बसोहली के कुछ चित्रों को उद्धृत और विश्लेषित किया, जिन्हें पश्चात्वर्ती शोध–कार्यों में मानकोट राज्य का ठहराया गया।[3] मोहिन्दर सिंह रन्धावा द्वारा मानकोट राज संग्रह के अध्ययन से इस विषय से संबंधित अन्य सामग्री प्रकाश में आयी थी और उन्ही की पहल पर पंजाब शासन ने मानकोट राजाओं के वंशज टीका इन्दर विजय सिंह जो अब भाखड़ा बाँध के समीप सालांग्री में रहते हैं, से चित्रों का एक विशिष्ट समूह अपने संग्रहालय हेतु खरीदा था, जो वर्तमान में राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ में सुरक्षित है।

इस संग्रहालय में संग्रहीत मानकोट राज संग्रह के केन्द्रीय विषय रामायण और भागवत के उद्धरण हैं। अतः इनमें धार्मिक चित्रण की बहुलता है। मानकोट में प्रचलित धार्मिक विश्वासों के विषय में कोई प्रमाणित अभिलेख नहीं है। परन्तु मानकोट दुर्ग में मुरली मनोहर (कृष्ण) मंदिर होने के कारण व राजा महिपत देव (लगभग 1660–1690 ईसवी), टेधी सिंह (लगभग 1710–1730 ईसवी), अजमत देव (लगभग 1730–1760 ईसवी) और दलेल सिंह (लगभग 1760–1780 ईसवी) आदि मानकोट शासकों के व्यक्ति चित्रों में 'वैष्णव तिलक चिह्न' उपस्थित होने के कारण यह कहा जा सकता है कि सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से धार्मिक झुकाव प्रधानतः वैष्णव धर्म की ओर था। मानकोट लघुचित्रों में राजा टेधी सिंह को भगवान विष्णु व भगवान कृष्ण की आराधना में लीन चित्रित करने से इस विचार की पुष्टि होती है। वास्तव में विष्णु देव के उपासक वैष्णव कहलाते हैं। वैष्णव लोग "विष्णु" के दस मुख्य अवतारों–मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, बलराम, राम, कृष्ण और कल्कि को प्रायः अधिक मानते हैं। इन दस अवतारों में भी श्री राम और श्रीकृष्ण की पूजा सम्पूर्ण भारत में प्रचलित है। अतः मानकोट लघुचित्र शैली के वैष्णव प्रभाव स्वरूप चित्रित किये गये चित्र श्रीविष्णु, श्रीराम व श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित हैं।

इन चित्रों में शेषनाग पर विष्णु भगवान, मत्स्य अवतार, मानकोट के राजा टेधी सिंह विष्णु की आराधना करते हुए, नृसिंह अवतार, वराह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राजा दशरथ, रावण वध, राम का दरबार, नंद को बधाई, कृष्ण गोपियों के वस्त्र हरण करते हुए, केशी वध, मुष्टिक–चाणूर वध, श्रीकृष्ण का जन्म, कृष्ण का यमलार्जुन को तारना, कृष्ण गोवर्धन को उठाये हुए, कंस के धोबी को मारना, कंस वध, मानकोट के राजा टेधी सिंह बाँसुरीवादक श्रीकृष्ण की आराधना करते हुए, माखन चोरी, बकासुर वध, अरिष्टासुर वध तथा शकट–भंजन आदि चित्र प्रमुख हैं। इन वैष्णव धार्मिक चित्रों में दृष्टव्य उच्च कोटि की रूपात्मकता और कलात्मकता का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ प्रमुख चित्रों का विवेचन इस प्रकार है–

मानकोट के राजा टेधी सिंह विष्णु की आराधना करते हुए

इस चित्र में मानकोट के राजा टेधी सिंह भगवान विष्णु की लक्ष्मीनारायण रूप में आराधना करते हुए चित्रित हैं। राजा टेधी सिंह को गहरे रंग का बेलबूटेदार जामा, पगड़ी व कमरबन्द पहने हुए खड़ी हुई अवस्था में चित्रित किया गया है। उनके एकचश्मी गौर वर्ण मुख के मस्तक पर टीका,

मानकोट के राजा टेधी सिंह विष्णु की आराधना करते हुए विशाल नेत्र, घनी–काली व सलेटी मूँछें और कान में कुंडल सुशोभित हैं। वे अपने जुड़े हुए हाथों में मनकों की एक माला और अंगूर व चावल से भरी पूजा की थाली लिये हुए, भगवान विष्णु के लक्ष्मीनारायण स्वरूप के सम्मुख खड़े हैं। भगवान विष्णु की

अष्टभुजी आकृति को श्वेतवर्णी, पुष्पयुक्त मुकुट व स्वर्णाभूषणों से सुसज्जित, अष्टभुजाओं में कमल–पुष्प पकड़े हुए तथा श्वेत परिधान धारण किये हुए चित्रित किया गया है। वे मोतियों की झालरवाले छत्र युक्त, सलेटी रंग के अलंकृत सिंहासन पर मसनद के सहारे विराजमान हैं।

सिंहासन के पीछे एक सेवक खड़ा चंवर झुला रहा है। भगवान विष्णु के सम्मुख आठ लघु आकार की स्त्रियाँ पंक्तिबद्ध हो हाथ जोड़कर खड़ी हैं। उन्होंने क्रमशः हरे, पीले, लाल व गुलाबी रंग के लहँगे तथा ओढ़नियाँ धारण किये हुए हैं।

चित्र में रेखाओं का लयपूर्ण व सुदृढ़ प्रयोग है। वर्णयोजना में परिप्रेक्ष्यानुसार पृष्ठभूमि में धूमिल तथा मुख्य आकृतियों में चटकीले रंगों का प्रयोग है। इस चित्र का आकार 172 X 250 मिमी0 है और हाशिये के साथ 205 X 285 मिमी0 है। राजा टेधी सिंह की आकृति के पैरों का कुछ भाग निचले हाशिये में आ गया है। चित्र के पृष्ठ भाग में 'टाकरी लिपि' में उद्धृत है, 'श्री लक्ष्मीनारायणजी दी सूरत महाराजे टाराधी सिंह दी सूरत'।[4]

राम का दरबार

इस चित्र में श्रीराम को सीताजी के साथ सिंहासन पर बैठे हुए चित्रित किया गया है। श्रीराम की आकृति को गहरे नीलवर्ण की, विशाल नेत्र वाली, सिर पर पुष्पयुक्त मुकुटधारी, आभूषणों से सुसज्जित व गहरे नारंगी रंग की धोती पहने हुए चित्रित किया गया है। उनके दाहिने हाथ में धनुष और बायें हाथ में बाण है। सीताजी की आकृति को गौरवर्ण, विशाल नेत्रयुक्त, आभूषणों से सुसज्जित, धारीदार चोली व सलेटी तथा लाल रंग का अलंकृत लहंगा पहने व पारदर्शी ओढ़नी ओढ़े हुए चित्रित किया गया है। सिंहासनारूढ़ श्रीराम के दाहिने पाँव के समीप बालरूप हनुमान जी अपने घुटनों के बल बैठे हैं।

राम का दरबार

चित्र में बायीं ओर जाम्बवंत भालू खड़े हैं जिन्हें नील व श्वेतवर्णी चित्रित किया गया है। वे हाथ जोड़कर भगवान की वन्दना कर रहे हैं। उनके आगे खड़े लक्ष्मणजी को गौरवर्ण, पुष्पयुक्त मुकुटधारी, विशाल नेत्र वाले, आभूषणों से सुसज्जित, कन्धे पर श्वेत रंग का पटका, कमर में कमरबंद व खड़ी धारियों वाला जामा धारण किये हुए चित्रित किया गया है। वे अपने हाथों में दीपक आदि से सुशोभित आरती की थाली पकड़े हुए हैं। चित्र में दाहिनी ओर धनुष–बाण पकड़े हुए दो अन्य आकृतियाँ खड़ी हैं। आगे वाली आकृति के एक हाथ में चँवर है।

पृष्ठभूमि में पीले रंग का प्रयोग है। चित्र में रेखाओं का स्पष्ट, लयपूर्ण, गत्यात्मक व सुदृढ़ प्रयोग है। धारीदार जामों के चित्रण में रेखाओं का सौन्दर्य देखते ही बनता है। वर्णयोजना सादगीपूर्ण है। चित्र में आकृतियों की बहुलता है। चित्र का आकार 161 X 263 मिमी और हाशिये के साथ 198 X 300 मिमी है। चित्र के ऊपरी भाग में प्रत्येक आकृति के ऊपर 'टाकरी लिपि' में उसका नाम उद्धृत है।

श्री 'डब्ल्यू० जी० आर्चर' के अनुसार यह चित्र 'रामायण ग्रंथमाला' का भाग है।[5] इसका चित्रण काल लगभग 1700 से 1710 ई० के मध्य का है। इस चित्र की एक विशेषता है कि इसमें आकृतियों का कुछ भाग एक–दूसरे को ढँके हुए है। जैसे–सिंहासन का कुछ भाग एक सेवक के जामे को ढँके हुए है और उसका जामा अपने पीछे वाले सेवक को ढँके हुए है।

कृष्ण गोपियों के वस्त्र हरण करते हुए

कृष्ण गोपियों के वस्त्र हरण करते हुए

इस चित्र में श्रीकृष्ण को गोपियों के वस्त्र चुराकर छिपाये हुए व गोपियों द्वारा उनसे वस्त्र लौटाने की प्रार्थना करने का चित्रण किया गया है। इस चित्र में चंचल मुखमुद्रा वाले, नीलवर्ण व विशाल नेत्र वाले श्रीकृष्ण गहरे हरे रंग के पत्तों वाले वृक्ष पर, पत्तों के झुरमुट में आधे छिपे बैठे हैं। उन्होंने सिर पर कमल पुष्पयुक्त स्वर्ण मुकुट व शरीर पर अनेक आभूषण धारण किये हुए हैं। वृक्ष पर टँगे गोपिकाओं के वस्त्रों को चटक लाल, नीले व पीले रंगों से चित्रित किया गया है। वृक्ष की पत्तियों को पुष्पगुच्छों के रूप में ज्यामितीय ढंग से व्यवस्थित किया गया है।

श्रीकृष्ण बाँयीं ओर से निकट आती हुई एक वस्त्रहीन गोपिका को वस्त्र पकड़ा रहे हैं। उसके शरीर पर एक पारदर्शी ओढ़नी–सी लिपटी हुई है। भिन्न–भिन्न गुलाबी व भूरी रंगतों वाली आठ अन्य वस्त्रविहीन गोपिकायें यमुना नदी के काले और भूरे जल में खड़ी हैं। सभी के काले केश सिर पर जूड़े के रूप में बँधे हैं व शरीर पर आभूषण हैं तथा हाथ मेंहदी से रचे हैं। चित्र में दाहिनी ओर तीन अन्य वस्त्र विहीन गोपिकायें यमुना के तट पर बैठी हैं। चौथी गोपिका स्वयं को वृक्ष के पीछे छिपाये हुए है। चित्र में रेखाओं का सुन्दर लयपूर्ण, घुमावदार व गत्यात्मक प्रयोग है। वर्ण योजना भावानुकूल है। चित्र में आकृति–संयोजन संतुलित है।

श्री डब्ल्यू०जी० आर्चर ने इस चित्र का चित्रण काल लगभग 1700 से 1710 ईसवी निरूपित किया है।[6] उनके अनुसार यह चित्र 'भागवत् पुराण' की प्रथम क्षैतिज ग्रन्थमाला का भाग है। इसका आकार 180 X 285 मिमी और हाशिये के साथ 205 X 310 मिमी है। चित्र के ऊपरी भाग में टाकरी लिपि में चित्रित वृतान्त से सम्बन्धित कुछ उद्धृत है। श्री एम०एस० रन्धावा और श्री जे० के० गैलब्रेथ ने भी अपनी पुस्तक में इस चित्र को प्रकाशित किया है।[7]

श्रीकृष्ण का जन्म

इस चित्र में श्रीकृष्ण के कारागार में जन्म का चित्रण है। चित्र दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में कारागार के अन्दर का दृश्य है। शिशु कृष्ण की आकृति नीलवर्ण, मुख चन्द्रमा के समान, नेत्र कमल सामान और पीले रंग के रेशमी वस्त्र में लिपटी हुई चित्रित की गयी है। उन्होंने कमल पुष्पों से सुसज्जित स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ है और उनकी चारों भुजायें शंख, सुदर्शन चक्र, कमलपुष्प व गदा पकड़े हुए हैं। श्रीकृष्ण के मुख मण्डल के चारों ओर दिव्य प्रकाशयुक्त–वलय चित्रित है।

वसुदेव और देवकी उनके दर्शन से अभिभूत हो करबद्ध वन्दना कर रहे हैं। वसुदेव को गौरवर्ण, विशाल नेत्र व काली मूंछों युक्त, सिर पर श्वेत रंग की पगड़ी गुलाबी रंग का छींटदार जामा, धारीदार कमरबन्द व पाजामानुमा वस्त्र पहने हुए चित्रित किया गया है। गौरवर्ण व विशाल नेत्र देवकी के केश खुले हुए हैं। उन्हें आभूषणविहीन, लाल रंग का लहंगा व पीली चोली पहने हुए तथा श्वेत रंग की अर्धपारदर्शी ओढ़नी ओढ़े चित्रित किया गया है।

वे कारागार में श्वेत रंग के पलंगपोश बिछे पलंग पर बैठी हैं। जिस पर एक लाल रंग का धारीदार मसनद रखा है। श्रीकृष्ण भी अवतरित होकर उसी पर बैठे हैं। कारागार में रात्रिकालीन अन्धकार को व्यक्त करने के लिए पृष्ठभूमि में गहरे भूरे रंग का प्रयोग किया गया है। प्रकाश व्यवस्था हेतु दीपकों का चित्रण किया गया है। चित्र के द्वितीय भाग में कारागार के बाह्य दृश्य को चित्रित किया गया है।

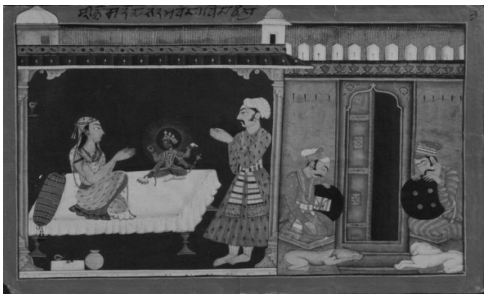

श्रीकृष्ण का जन्म

कारागार के द्वार पर बैठे हुए दो द्वारपाल गहन निद्रा में लीन हैं व द्वार खुला हुआ है। उनकी कमर में तलवारें व हाथों में काले रंग की विशाल ढालें हैं। द्वार पर बैठे हुए क्रमशः बादामी व श्वेत रंग के दो श्वान भी निद्रामग्न हैं।

प्रसिद्ध कला इतिहासकार व कला समीक्षक डा० मोहिन्दर सिंह रन्धावा के अनुसार इस चित्र का चित्रण काल 18वीं शताब्दी के लगभग प्रारम्भ का है। यह चित्र 'भागवत पुराण' के उपाख्यानों पर आधारित चित्रों की श्रृंखला का भाग है।[8] इस चित्र का आकार 12.3 X 8.0 इंच है। चित्र के ऊपरी हाशिये में 'टाकरी लिपि' में कुछ उद्धृत है।

कृष्ण का यमलार्जुन को तारना

कृष्ण का यमलार्जुन को तारना

इस चित्र में माता यशोदा व गोपी को परस्पर वार्तालाप करते हुए तथा ऊखल से बंधे कृष्ण को दो वृक्षों को जड़ से उखाड़ते हुए चित्रित किया गया है। चित्र दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में बरामदे में बैठी यशोदा एक गोपिका से श्रीकृष्ण की बाल क्रीड़ाओं के विषय में परस्पर वार्तालाप कर रही हैं। यशोदा और गोपिका को लहंगा व चोली धारण किये हुए चित्रित किया गया है। उन्हें पारदर्शी ओढ़नियाँ पहने हुए और आभूषणों से अलंकृत दर्शाया गया है।

चित्र के द्वितीय भाग में यशोदा द्वारा दण्डित बालक कृष्ण को ओखली से बँधा हुआ दर्शाया गया है। नीलवर्ण व विशाल नेत्र वाले बालक कृष्ण आभूषणों से सुसज्जित तथा लाल रंग का अधोवस्त्र

धारण किये हुए हैं। श्रीकृष्ण ओखली को दो वृक्षों के मध्य से खींचते हैं, जिसके फलस्वरूप वृक्ष तुरन्त जड़ से उखड़ जाते हैं। जड़ से उखड़े वृक्षों को तने के मध्य भाग से एक–दूसरे को काटते हुए संयोजित किया गया है। उनके हल्के व गहरे हरे रंग के पत्तों का संयोजन एक पुंजीय व बाह्योन्मुख है तथा उन्हें पुष्पगुच्छ के रूप में चित्रित किया गया है। वृक्षों के ऊपरी भाग के सन्मुख मध्य में दो अन्य लघु मानवाकृतियों को मुकुट व आभूषणों से सुसज्जित तथा क्रमशः लाल व गुलाबी रंग की धोती पहने हुए चित्रित किया गया है। जो सम्भवतः कुबेर के पुत्र नलकूबर व मणिग्रीव हैं जिनका श्रीकृष्ण ने वृक्षरूप से उद्धार किया है। चित्र की पृष्ठभूमि में गहरा पीला सपाट रंग भरा है।

चित्र में रेखांकन स्पष्ट, सुदृढ़ व गतिमय है। वर्णयोजना भावानुकूल है। काल्पनिक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग है। 'श्री डब्ल्यू0 जी0 आर्चर' के अनुसार इस चित्र का चित्रण काल लगभग 1700 से 1710 ई० के मध्य का है। उनके अनुसार यह चित्र 'भागवत पुराण' की प्रथम क्षैतिज ग्रंथमाला का भाग है।[9] इसका आकार 180 X 285 मिमी है और हाशिये के साथ 205 X 310 मिमी है। चित्र के ऊपरी भाग में 'टाकरी लिपि' में चित्रित वृतान्त से सम्बन्धित कुछ उद्धृत है।

मानकोट के राजा टेधी सिंह बाँसुरीवादक श्रीकृष्ण की आराधना करते हुए

इस चित्र में मानकोट के राजा टेधी सिंह को बाँसुरीवादक श्रीकृष्ण की आराधना करते हुए चित्रित किया गया है। राजा टेधी सिंह को चटकीले पीले रंग का जामा व पगड़ी पहनकर, अपने जुड़े हुए हाथों में मनकों की एक माला तथा कमलपुष्प पकड़े हुए एक कल्पित दृश्य जिसमें श्रीकृष्ण नौ गोपिकाओं के समूह के मध्य चौकी पर खड़े बाँसुरी बजा रहे हैं, के सम्मुख खड़े हुए चित्रित किया गया है। उनके एक चश्मी गौरवर्ण मुख के मस्तक पर टीका, विशाल नेत्र, घनी–काली व सलेटी मूँछें और कान में कुण्डल सुशोभित हैं।

मानकोट के राजा टेधी सिंह बाँसुरीवादक श्रीकृष्ण की आराधना करते हुए

बाँसुरीवादक श्रीकृष्ण को नीलवर्ण, विशाल नेत्रयुक्त, शीश पर पुष्पयुक्त मुकुटधारी आभूषणों व श्वेत पुष्पों की वनमाला से सुसज्जित, पीले रंग का पटका तथा धोती धारण किये त्रिभंगी मुद्रा में खड़े हुए दर्शाया गया है। उनके पीछे खड़े गौरवर्ण बलरामजी उनपर चँवर झुला रहे हैं। श्रीकृष्ण के दोनों ओर खड़ी गोपिकाओं को गौरवर्ण, आभूषणों से सुसज्जित व क्रमशः बैंगनी, हरे तथा लाल रंगों के लहंगे धारण किये हुए हाथ जोड़कर आराधना करते हुए चित्रित किया गया है। राजा टेधी सिंह की आकृति के विपरीत अन्य सभी आकृतियों को लघु आकार में दर्शाया गया है। इन आकृतियों के समूह के पीछे श्वेत, पीली व भूरी रंगतों वाली कुछ गायों के मुख भी दृष्टिगत हो रहे हैं।

चित्र की पृष्ठभूमि में हल्के पीले रंग का प्रयोग है। अग्रभूमि में कमल–पुष्पों के एक ताल में बगुले भी दर्शाये गये हैं। पृष्ठभूमि में वृक्षों के तीन कुंज व उनके मध्य में पक्षी उड़ते हुए चित्रित किये गये हैं। आकाश में आठ देव मुखों को भी दर्शाया गया है। इस चित्र में रेखाओं का स्पष्ट, सुदृढ़ आलंकारिक, गतिपूर्ण

व लयात्मक सौन्दर्य दृष्टव्य है। रंगों की मनोरम, रसीली व प्रमुदित करने वाली छटा दर्शनीय है। काल्पनिक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग है। चित्र में आकृतियों की बहुलता होते हुए भी पर्याप्त अन्तराल है।

'श्री डब्ल्यू० जी० आर्चर' ने इस चित्र का चित्रण काल लगभग 1750 से 1760 ईसवी के मध्य निरूपित किया है।[10] इस चित्र का आकार 180 X 280 मिमी0 है और हाशिये के साथ 204 X 302 मिमी0 है। राजा टेधी सिंह की आकृति के पैरों का कुछ भाग निचले हाशिये की सीमारेखा पर आ गया है।

इन सभी चित्रों के हाशिये लाल रंग के हैं जिनपर काले व श्वेत रंगों से दोहरी सीमा रेखायें अंकित की गयी हैं।

इस प्रकार मानकोट लघुचित्र शैली के वैष्णव धार्मिक चित्रों का रूपात्मक एवं कलात्मक अध्ययन करने पर यह कहा जा सकता है कि इन लघुचित्रों के रूपात्मक व कलात्मक गुण स्वयं में विशिष्ट हैं जो इन्हें दूसरे लघुचित्रों से पृथक करते हैं। इन चित्रों में एक ओर तो अद्भुत भाव सम्प्रेषणीयता और उत्कृष्ट कलात्मक कौशल की मनोहर झांकी प्रस्तुत की गयी है, वहीं दूसरी ओर चित्रों के मूल में लोककला सी सादगी और सरलता प्रदर्शित की गयी है। मानकोट लघुचित्रों का संसार लघुवृत्त में समाहित होने पर भी स्वयं में परिपूर्ण है और इनकी मौलिकता व विशिष्टता के विषय में कोई संदेह नहीं है।

सन्दर्भ

1. Randhawa, M.S. (1959), Basohli Painting, The Pulications Divison, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, Old Secretariat, Delhi-8, **Pg.** 24.
2. Archer, W.G. (1973), Indian Paintings from the Punjab Hills, [Vol. I], Sotheby Parke Bernet Publications Limited 34 New Bond Street, London WIA2AA, **Pg.**368.
3. Chaitanya, Krishna, (1984), A History of Indian Painting: Pahari Traditions.
4. Ibid.
5. Archer, W.G. (1973), Indian Paintings from the Punjab Hills, [Vol. I], Sotheby Parke Bernet Publications Limited 34 New Bond Street, London WIA2AA, **Pg.**373.
6. Ibid. **Pg.** 376.
7. Randhawa, M.S., Galbraith, J.K. (1968), Indian Painting: The Scene, Themes and Legends, Boston, Houghton Mifflin Company, **Pg.** 124.
8. Randhawa, M.S. (1959), Basohli Painting, The Pulications Divison, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, Old Secretariat, Delhi-8, **Pg.** 50.
9. Archer, W.G. (1973), Indian Paintings from the Punjab Hills, [Vol. I], Sotheby Parke Bernet Publications Limited 34 New Bond Street, London WIA2AA, **Pg.** 378.
10. Ibid. **Pg.** 380.
11. Sandhu, Sonika, (2007) "राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ में प्राप्त मानकोट लघुचित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन", Ph.D. Thesis, Dr. B.R. Ambedkar University, Agra.